ज्ञान - विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

एवं

शिक्षण महर्षि ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कलम

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित,

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

२७ तथा २८ जनवरी २०१७

भाषा, समाज और समकालीन हिन्दी साहित्य

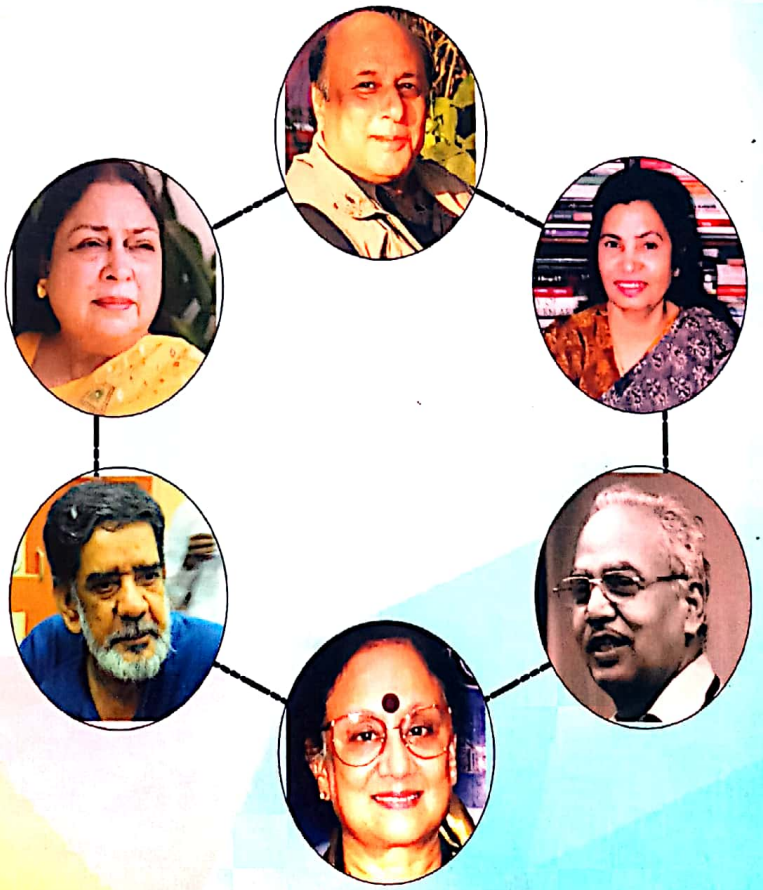

मार्गदर्शक

डॉ. अशोकराव मोहेकर

अध्यक्ष

डॉ. मुकुंद गायकवाड

संपादक

डॉ. दत्ता साकोळे

Scanned by CamScanner

समकालीन हिंदी की अन्य विधाए

अनु.	विषय	नाम	पृ.
49.	समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति : आधे - अधूरे	डॉ. प्रतिभा येरेकार	1
50.	दिल्ली उंचा सुनती है नाटक में चित्रित भ्रष्टाचार	प्रा.आतार तेहसीन हबीबसाब	1
51.	समकालीन दलित साहित्य	संतोष आदमाने	1
52.	समकालीन हिन्दी आत्मकथा : जीवन - गीत के स्वर	प्रा. डॉ. विनोदकुमार वायचळ	1
53.	भाषा, समाज और हिंदी का महत्त्व	गिरे दिलीप	2
54.	समकालीन आदिवासी साहित्य	डॉ. मुकूंद गायकवाड	2
55.	समकालीन स्त्रीवादी साहित्य	प्रा. सुरेन्द्रकुमार साहू	2
56.	समकालीन हिंदी साहित्य : दलित आत्मकथा में यथार्थ	डॉ. संजीवकुमार नरवडे	2
57.	समकालीन नाटककार डॉ. शंकर शेष	प्रा. संजय जोशी	2
58.	समकालीन हिंदी दलित साहित्य	सुलक्षणा जिरोबे	2
59	समकालीन आदिवासी साहित्य	प्रा. खंदकुरे व्यंकट	2
60.	समकालीन हिंदी नाटक	डॉ. सुभाष प्रल्हाद इंगळे	2
61.	समकालीन नाटकों में आर्थिक चेतना	डॉ. राम बडे	2
62.	महिला आत्मकथा में व्यक्त संवेदना	प्रा. हिरामन टोंगारे	2
63.	डॉ. नरेन्द्र मोहन के नाटकों की प्रासंगिकता	डॉ. बालजी गरड	2
64.	समकालीन हिंदी नाटककार	प्रा. रमेश कांबळे	2
65.	समकालीन हिंदी नाटक : कबिरा खड़ा बाजार	प्रा. टी. मंजुला	2
66.	समकालीन तेलुगू नाटकों में नारी जीवन	प्रा. टी. निरंजन	2
67.	समकालीन भारतीय साहित्य में स्त्री - विमर्श	डॉ. के. श्याम सुन्दर	2
68.	समकालीन महिला आत्मकथाओं में नारी जीवन	डॉ. ए. शारदा	2
69.	समकालीन स्त्रीवादी साहित्य	डॉ. डी. जयाप्रदा	2
70.	समकालीन महिला आत्मकथा	डॉ. गिरीश काशीद	2
71.	समकालीन हिंदी नाटक	डॉ. भालेराव व्ही. के.	2
72.	भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी नाटक	डॉ. रणजीत जाधव	2
73.	समकालीन हिंदी नाटकों में नारी समस्याएँ	डॉ. सिध्दाराम पाटील	2
74.	सुरेन्द्र वर्मा कृत तीन नाटक में कथ्य	डॉ. जी.डी. बिराजदार	2

Scanned by CamScanner

59. समकालीन आदिवासी साहित्य

- प्रा. खंदकुरे व्यंकट अमृतराव

सहाय्यक प्राध्यापक

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

आदिवासी साहित्य मतलब जिसमें अपनी भाषा में लोकगीत, कथाएँ, प्रथाएँ आदि का वर्णन होता है। वही आदिवासी साहित्य कहा जाता है।

दलित साहित्य की तुलना में अदिवासी साहित्य बहुत कम मात्रा में लिखा हुवा है। वैसे देखा जाय तो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की सारी तो समस्याएँ एक समान नजर आती है। दलितो को भारतीय समाज का अंग होते हुऐ भी भारतीय समाज से बहिष्कृत किया गया और बेचारे आदिवासी तो उस समाज का सभ्यता का अंग होकर भी उसे मुख्य धारा से अलग कर दिया गया। दलितों में कुछ वर्ग उभरकर आये। इस वजह से उनमें जनजागृती हुई और वे अपनी व्यथा-कथा, यातना, अनाचार अन्याय को बता सके। उन्होंने अपनी यांतनाओ कों कलम द्वारा रेखाकिंत किया है। इसलिए विपूल मात्रा में हमें दलित साहित्य पढने को मिलता है।

पर आदिवासी समाज को बिल्कुल अलग-अलग कर दिया। कलम की ऐसी ताकत है, जिसके द्वारा हम अपनी अभिव्यक्ती को साहित्य को दिशा दे सकते है। अभिव्यक्ती की ताकत अगर मनुष्य को पशु से भिन्न बनाती है, तो साहित्य उसे दिशा देता है और अहसास दिलाता है कि वह मनुष्य अकेला नहीं बल्कि एक समाज का अंग है और प्रतिबध्द साहित्य को गतिशील बनाता है- जड नहीं। साहित्य ही हमारे समाज का दर्पण होता है। लेकिन आजतक साहित्य ने आदिवासीयों की कलम द्वारा उद्‌घटित नहीं किया है। जब हम भारतीय हिन्दी साहित्य पढते है तो उसमें हम बाहर से आनेवाले और यहाँ आकर बसने वाले लोगों का ही हम साहित्य पढते है। बाहर से आकर जिन्होंने यहाँ राजकाज किया इस देश को चलाया। उनकी शोर्य गाथाएँ, कथाएँ उनके द्वारा सामान्य लोगो पर किये जानेवाले अन्याय, अत्याचार या दानता को हमने रेखांकित किया लेकिन जो यहाँ के असली निवासी जो आदिवासी माने जाते है। उनका इतिहास, उनकी कथाएँ, उनका कथाएँ, उनका साहस, उनका शौर्य अपने साहित्यकार नहीं दिखा सके यह आज एक खेद की बात है। इसलिए आदिवासी साहित्य आज पढने को ज्यादा नहीं मिलता है।

आजतक आदिवासी समाज को खासकर हमारे देश में सनातन धार्मिक कट्टरवादियों ने आदिवासी समाज को उनके दायरे से बाहर ही नहीं निकलने दिया है। जो समाज अधिक कलात्मक, संवेदनशील, उदार, साहसी, उदात्त, सहनशील, सरल, भोला-भोला, सीधा-साधा, अपनी ताल, लय, स्वर, में पारंगत, जिसके अपने जीने के नियम है। हर आपदा को सहता है, प्रकृती को नष्ट नहीं बल्कि प्रेम करता है, उसे पालता हे, पोसता है, उसे जंगली आदिवासी कहकर कोसा जाता है। इस आदिवासी समाज को साजिश की तहत पीछे रखा गया है।

आज के समय में ऐसे लोगों को या आदिवासे समाज की प्रति संवेदनशील होना जरुरी है। उनकी वाणी को,

Scanned by CamScanner

समस्या को, उनके प्रश्नों को कलम देना ही उनके साथ न्याय करने जैसा है। उन्हें जानना या जाग्रत करना यह साहित्य द्वारा ही किया जाता है। आज के समय में आदिवासी लेखक, रचनाकार भले ही कम हो, पर वे इस कार्य में लगे हुऐ है। समय की धारा के साथ कदम मिलाना चाहिए और आदिवासी समाज को प्रगती की धारा में ले जाने के लिए हर एक क्षेत्र को प्रयास करना चाहिए। आंबेडकर ने दलित और आदिवासी दोनो को समान रुप में बात उठाई और नेतृत्व भी प्रदान किया। लेकिन आदिवासी समस्यओं की ओर किसी ने भी दृष्टीपात नहीं किया। और उन्हें बहिष्कृत किया गया। आदिवासी खदेटे गये, ठगे गये, विस्थापित कर यायावरी-बंजारो जैसी जिन्दगी जीने पर बाध्य किया गया। इनकी जरुरत थी् जंगल, जल, जमीन और सामंतो-महाजनों और जमीनंदारो से मुक्ति पाना। लेकिन उनका स्वाभिमान उन्हे आबादी से दूर जंगल में ले गया। इसलिए वे आज तक समाज के धारा में सम्मिलित नही हो सके है।

आज के समकालीन युग में आदिवासी समाज की समस्याओं की लेकर आदिवासी साहित्यकारों ने अपनी यथार्थवादी वास्तविकता कहानी, उपन्यास, नाटक एवं आत्मकथा के माध्यम से साहित्य में स्थान देने का प्रयास किया है। आदिवासी लोगों का किस तरह आज भी आर्थिक, सामाजिक, भावनिक, शारिरिक शोषण किया जाता है। यह कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। आज के समय में आदिवासी के लिए भारत सरकार ने बहुत सारी योजना का आरंभ किया है। लेकिन यह समाज अनपढ होने के कारण इस योजना का लाभ नहीं उठा सकता है। इसलिए ऐसे आदिवासी समाजों में सरकार को पहले शैक्षणिक जागृती करना बहुत जरुरी है। शिक्षा के माध्यम से ही हम इस समुदाय को प्रगती की दिशा में ले जा सकते है।

आज का युग यह आधुनिक युग बहुतही अवसरवादीयों का युग बन गया है। आज सवर्ण समाज आदिवासी समाज की योजना या नौकरी का लाभ उठाने के लिए आदिवासी समाज का फर्जी दाखीला निकालकर इस समाज का लाभ उठा रहे है। ऐसे लोगों को सशक्त कानून बनाकर सरकाने कडी-से कडी शिक्षा देनी चाहिए। आज ऐसे अन्य वजह से यह आदिवासी समाज बहुत ही पीछे की और घसीटता जा रहा है।

आज के समकालीन साहित्य में आदिवासी साहित्य कों एक अलग पहचान बनाकर साहित्य के माध्यम से जन-जागृती या समाज प्रबोधन करने का कार्य साहित्ययकारों को करना चाहिए। आज पाठयक्रम किसी आदिवासी वीर की कहानी नहीं रखी जाती है। क्योंकी पाठयक्रम बनाने वाला आजतग आदिवासी समाज का कोई व्यक्ती नहीं रहा है। सही मायने में देश के मूल निवासी को साहित्य में न स्थान मिला है। न ही उसे प्रगति की धारा में सम्मिलित नहीं होने दिया है। देश का विकास होना है तो सबका साथ, सबका विकास होनास इस ब्रिद वाक्य से हमें चलना चाहिए। तब आदिवासी समाज और देश हमारा उन्नती की राह पर चलेगा। आज के समकालीन समाज में सरकार ने जो आरक्षण आदिवासीयों को दिया है। उसका लाभ कोई और उठा रहे है। इससे आदिवासी और पिछे घसीटता जा रहा है।

आज समकालीन साहित्य में आदिवासी साहित्य को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता है। यह एक समस्या हमें

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-83109-30-2

नजर आती है। आज बढे-बढे शैक्षणिक संस्था, विश्वविद्यालय, अस्पताल आदि क्षेत्रों में नौकरियाँ में आदिवासी समाज के लोग नहीं लेते है। उनकी जगह आज भी बहुत खाली पडी है। आज हम आदिवासी बच्चों को पढां सकते है। लेकिन उँचे-उँचे पद पर उन्हे कभी नौकरि नहीं दे सके। कहा तो चतुर्थ श्रेणी या तृतीय श्रेणी की नौकरी उनके हाथ में थाम देते है। उँचे पदों का आरक्षण जान बुण्कर नहीं भरा जाता है। यह आज हमारे देश की शेकांतिका है। ाज यह सारी खेद भरी बाते एक साहित्यकार अपने रचनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है।

आज के समकालीन आदिवासी साहित्य में एक साहित्यकार सभी दृश्यों को अपनी कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, नाटक आदि विधाओं के माध्यम आदिवासी समाज की त्रासदी व्यक्त करता है। लेकिन इस समाज में ज्यादा लोग अनपढ होने के कारण उनका जितने हो सके उतना विकास आजतक नही हुआ है। इसलिए हमें ऐसे आदिवासी समाज के लोगों से घर-घर जाकर उनमें पढने की बाते करनी चाहिए। उनमें शैक्षणिक जनजागृती करनी चाहिए। तभी सही मायने में हमारा देश उन्नती की राह पर रहेगा?

संदर्भग्रन्थसूचिः-

१) आदिवासी साहित्य - डॉ. शेख शहेनाज बेगम अहेमद

२) समकालीन कवि और काव्य - कल्याण चन्द्र

३) जूठन - ओमप्रकाश वाल्मीकी

४) मुक्तिपर्व - मोहनदास नैमिशराय

५) एक जमीन अपनी - चित्रा मुद्गल

६) मुझे चांद चाहिए - सुरेन्द्र वर्मा.

Scanned by CamScanner

आदित्य
प्रकाशन

ISBN : 978-93-83109-26-5

Scanned by CamScanner